गुलज़ार

गुलज़ार के गीत

आप सुखी हों तो भी गीत गाते हैं और दुखी हों तब भी। जो आप महसूस करते हैं, उसे गीतकार शब्दों में पिरोकर मुखर कर देता है। यही कारण है कि फ़िल्म-गीत हर अधर पर नृत्य करते नज़र आते हैं। गीत एक तरह का मुहब्बत भरा स्पर्श है, जिससे विरही को सांत्वना मिलती है और मिलन का आनन्द बढ़ा देते हैं ये गीत।

हम बहुत कमज़ोर हैं। रात-दिन हमें तरह-तरह के घाव मिलते रहते हैं। समस्त घावों का एक ही इलाज है—धीरज, धैर्य। घाव भरने के लिए समय का गुज़रना ज़रूरी है और समय गुज़ारने के लिए हम आपको देते हैं गीत।

गीत, जो बहुत कुछ समझा देंगे, बहुत कुछ सुलझा देंगे।

गीत गुनगुनाना आप भूले तो नहीं ?

24 रुपये



कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

गुलज़ार के गीत

गुलज़ार के गीत

गुलज़ार

संकलन

भूषण बनमाली



राधाकृष्ण

प्रथम संस्करण : 1979

मूल्य
24 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
दिल्ली-110032



श्री ओंप्रकाशजी के नाम

साल-भर पहले की बात है ओमजी ने मुझसे, मेरे गीतों का संग्रह माँगा था।

मैं झिझका, इसलिए कि फ़िल्मी कविता बड़ी कमर्शियल डिमाण्ड पर लिखी जाती है, और वो हमेशा शायर का अपना दृष्टिकोण हो, ऐसा नहीं होता। बड़े प्यार से हँस के बोले थे ओमजी :

"भई, तुम्हारा नहीं तो किसी का दृष्टिकोण तो होगा, फ़िल्मों के किरदार भी कोई समाज के बाहर से तो नहीं होते"—और बोले, "मैं कुछ ऐसी कविताएँ छापना चाहता हूँ जो गायी जा सकें।"

आज जब यह संग्रह तैयार हुआ तो वह हमारे बीच नहीं हैं। यह संग्रह देखने के ठीक चार दिन पहले तो...।

यह संग्रह उन्हीं की काविश है, उन्हीं के नाम समर्पण करता हूँ।

गुलज़ार

क्रम

रंगारंग

गुलज़ार के गीत

गुलज़ार : एक शब्द-चित्र

जागते रहना बहुत बड़ी चीज़ है। अधिकांश लोग जम्हाइयाँ लेते हैं, साँस नहीं लेते। यानी जब खड़े होते हैं दरअसल तब भी पड़े होते हैं। वे मानसिक तंद्रा में बात करते हैं, इसीलिए सुनने वाले को नींद आने लगती है। आधे जागे हुए, आधे सोये हुए; आधे प्रबुद्ध, आधे जाहिल; आधे स्नेह-सिक्त, आधे स्नेह-रिक्त; आधे भावुक, आधे काठ-कठोर; आधे डाकू, आधे साधु; आधे ज़िंदगी गुज़ारते हुए और आधे उम्र की क़ैद काटते हुए—आधे के इस पहाड़े में पूरी ज़िंदगी ख़त्म हो जाती है और चलती-फिरती इकाई की जगह महज़ नाम रह जाता है और इस नाम को भी वक़्त का स्पंज दोहरे-लिखे शब्द की तरह पोंछ देता है। ज़िंदगी समय का दिया हुआ एक छोटा-सा दान है; इसीलिए मैं कहता हूँ, जागते रहना बहुत बड़ी चीज़ है।

गुलज़ार को मैंने हमेशा जागते हुए पाया है—अलावा प्राकृतिक आवश्यकता के। और इस आवश्यकता को भी गुलज़ार कम-से-कम समय देता है। नींद में भी अंदर कुछ जागता रहता है; यही वजह है कि निद्रावस्था में आवाज़ देने पर मैंने गुलज़ार को कभी चौंककर उठते नहीं देखा। पलकें, जो नींद के दबाव से बंद हो गयी थीं, अचानक खुल जाती हैं और वह कहता है, 'हूं ?' इसके विपरीत, वे लोग, जिनके बारे में ग़ालिब ने कहा है :

हैं नींद में हनूज़[1] जो जागे हैं ख़्वाब में।

आराम नहीं, आलस्य नहीं, मगर उतावलापन भी नहीं। मात्र जागरूक है। और इसी 'मात्र' के अंतर्गत क्या-कुछ आ जाता है, यह हिसाब लगाकर बताना पड़ेगा। जो हिसाब मैंने लगाया है वही इस परिचय में पेश कर रहा हूँ।

लेखक तथा रचनाकार की ज़िंदगी के हालात उसी तरह जानने ज़रूरी हैं जैसे अपराधी के अपराध के कारण जानने ज़रूरी होते हैं। प्रत्येक रचना पर 'क्यों, कैसे, किन हालात में' जैसे प्रश्न पूछे जाने चाहिएँ ताकि यह मालूम हो सके

1. अब भी।

कि रचना कितनी सामयिक है और किस हद तक समयातीत।

गुलज़ार की जन्म-तिथि क्या है, मुझे मालूम नहीं। पूछने पर शायद बतायेगा भी नहीं। अनुमानतः बयालीस बार गुलज़ार इस ज़मीन के साथ सूरज की परिक्रमा कर चुका है। बरसों तक बरसों में भटकने के बाद एक दिन उसने वक़्त के घोड़े की बाग संभाल ली और यहाँ से ज़िंदगी जैसे एक यात्रा हो गयी :

मैं क़ायनात में, सय्यारों में भटकता था
धुएँ में, धूल में उलझी हुई किरन की तरह
मैं इस ज़मीं पे भटकता रहा हूँ सदियों तक
गिरा है वक़्त से कट कर जो लम्हा, उसकी तरह
वतन मिला तो गली के लिए भटकता रहा
गली में घर का निशाँ ढूँढता रहा बरसों
तुम्हारी रूह में अब जिस्म में भटकता हूँ।

लबों से चूम लो आँखों से थाम लो मुझको
तुम्हारी कोख से जन्मूँ तो फिर कहीं पनाह मिले।

घर छोड़ा तो इतनी बड़ी दुनिया सामने थी और दिनों और रातों की ऐसी अंतहीन शृंखला कि देखते और चलते जाना मजबूरी हो गया; यह अलग बात थी कि इस मजबूरी में असीम आनंद भी था। दिनों को देखते-देखते रातें बनाता रहा और रातों को चलते-चलते दिन करता रहा :

हसरते-फ़ुर्संत ने बख़्शा बस कि हैरत को रिवाज

वे रात-दिन हैरत के थे। फ़ुर्संत-ही-फ़ुर्संत थी, मगर हैरत-ही-हैरत थी, कि वह दिन समझने के थे और समझदारी के दिन अभी बहुत दूर थे। यह शाम क्या होती है, यह समंदर क्यों होता है, यह चाँद गुब्बारा है कि बूंद, यह सूरज आँख है कि आईना, ये रिश्ते फूल हैं कि पत्थर, मुहब्बत हार है कि अजगर—यानी, निरंतर 'क्यों', निरंतर 'कब से', और निरंतर 'कैसे'? मगर अभी जल्दी बिलकुल नहीं थी कि समय मापने का यंत्र (कि जो काम है) अगर हाथ में न हो तो फ़ुर्संत-ही-फ़ुर्संत नज़र आती है। गुलज़ार के लिए ये हवा में उड़ने के दिन थे।

उक़ाब सातवें आसमान में जाकर तैरता है, मगर आहार लेने के लिए उसे भी ज़मीन पर आना पड़ता है। अपने लिए आहार जुटाना अपने-आपमें एक काम है (कितने ही लोग तो सिर्फ़ इसी में ज़िंदगी गुज़ार देते हैं।)। आहार की तलाश ने कई काम कराये। पहले पता चला, गुलज़ार सेल्समैन हो गया है। फिर पता चला, गुलज़ार अपने भाई का कारोबार देखता है। फिर समाचार मिला, गुलज़ार

पेंट 'मिक्स' करके कई तरह के रंग तैयार करने लगा है—न सिर्फ़ यह, बल्कि इसमें निपुणता भी प्राप्त कर ली है। फिर मालूम हुआ कि गुलज़ार ने एक मोटर-गैरेज और पेट्रोल-पम्प का मैनेजमेंट संभाल लिया है, और फिर यहीं से एक निर्देशक गुलज़ार को स्टूडियो में उठा ले गया। और जब तक पत्र-व्यवहार के लिए दोस्तों को वहाँ का पता भेजा जाता, मालूम हुआ, गुलज़ार विमल राय-यूनिट में प्रवेश पा गया है।

आहार की तलाश खत्म हुई तो आर्थिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष शुरू हो गया। आहार के लिए काम करने का अर्थ था कि आदमी अपनी गुलामी करता रहे और अब गुलज़ार को इससे मुक्त होना था। ये गुलज़ार के मेहनत के दिन थे। शरीर की इस यात्रा के साथ-साथ मानसिक सफ़र भी जारी रहा। शरीर ने दस साल का सफ़र तय किया तो 'समझ' सौ बरस आगे निकल गयी। मनुष्य-मात्र के कई हज़ार वर्षीय इतिहास को मोटे तौर पर जाना (इतिहास में इस क़दर दिलचस्पी है कि सन् ज़बानी याद हैं—यह अलग बात है कि अपने कॉलर का साइज़ याद नहीं रहता।)। वर्तमान को समझने की कोशिश की और भविष्य को अपना हिस्सा देने की चेष्टा में निरंतर रत है। मिज़ाज में शायरी थी, सो जो महसूस किया उसे शब्दों में पिरो दिया :

कंधे झुक जाते हैं जब बोझ से इस लंबे सफ़र के
हाँप जाता हूँ मैं जब चढ़ते हुए तेज़ चढ़ानें
साँसें रह जाती हैं जब सीने में इक गुच्छा-सा होकर
और लगता है कि दम टूट ही जायेगा यहीं पर।

एक नन्हीं-सी मेरी नज़्म मेरे सामने आकर
मुझसे कहती है मेरा हाथ पकड़कर, मेरे शायर
ला, मेरे कंधों पे रख दे, मैं तेरा बोझ उठा लूँ।

शायरी पे यह 'मुग़ल बच्चा' मरता था और शायरी ने इसे मार रखा था। जिस शायरी ने मार रखा था, उसी शायरी ने एक दिन बेड़ियाँ काट दीं और कहा : 'जा, तुझे आज़ाद किया।' बिमल राय की फ़िल्म 'बंदिनी' के लिए एक गीत लिखा, 'मोरा गोरा अंग लई ले, मोहे श्याम रंग दई दे'। पलक झपकते में गीत हिंदुस्तान के हर रेडियो-स्टेशन से प्रसारित हो रहा था। गुलज़ार के लिए एक साथ कई दरवाज़े खुल गये। गुमनाम गुलज़ार लोगों के होंठों पर थिरकने लगा। नज़रें पीछा करने लगीं, सर उठने लगे, इशारे होने लगे :

बहुत-से हाथ उतरने लगे हैं कंधों पर
बहुत-सी उँगलियाँ जुड़ने लगी हैं हाथों में

सलाम करते हैं वह लोग छू के माथे को
'वलाम' कहते थे जो सर की एक जुम्बिश से
हँसी की राल टपकती है लोगों के मुँह से
खुलूस-ओ-शौक़ हथेली पे रखके लाते हैं
वड़े तपाक से मिलते हैं मिलनेवाले मुझे।

हुई है तुझसे जो निस्वत उसी का सदक़ा है
वगरना......
'वगरना शहर में ग़ालिव की आवरू क्या है!'

शायरी अपने शायर को तंग पिंजरे में क़ैद कर लेती है, मगर बड़ी शायरी अपने शायर को अस्तित्व के बड़े पिंजरे में आज़ाद कर देती है। गुलज़ार आज़ाद हो गया। और ये वह दिन थे जव गुलज़ार आत्म-निर्भर हो गया था। गुलज़ार शायरी को ईश्वर की देन नहीं मानता। इसी वजह से उसकी बातों में शायरी है और शायरी में हँसी-हँसी में कही जाने वाली बातें। और इसीलिए मैं कहता हूँ कि शायरी उसके मिज़ाज में है। ग़ालिव कहता है :

घिसता है जवीं ख़ाक पे दरिया मेरे आगे।

गुलज़ार को सुनता हूँ तो लगता है, अगर वह नदी से कहे कि मेरे पीछे-पीछे चल, तो वह चले। अगर वह तितलियों से कहे, 'ए, क़तार बाँधकर बैठो,' तो वे वैठें। तितलियाँ, जो शब्द हैं और नदी, जो सोच है।

सुवह-सवेरे आँख खुलने पर आदमी को विस्तर के पास एक फूल उगा हुआ और मुसकराता हुआ मिले—सफलता कुछ ऐसी ही चीज़ है। फूल को देखकर खुशी हो सकती है लेकिन पौधों को खाद चाहिए, पानी चाहिए, धूप चाहिए, खुली हवा चाहिए और अनावश्यक शाख़ों की कटाई-छँटाई चाहिए।

गुलज़ार ने अपनी शाख़ों की वेदर्दी से 'प्रूनिंग' की है, पौधे को सींचा है, धूप और हवा दी है और अब यह पौधा घने साये वाला पेड़ है, जिसकी छिद्रीली छाँव में न सिर्फ़ वह खुद वल्कि दूसरे भी वैठकर आराम और सुरक्षा अनुभव करते हैं। ये गुलज़ार के समझदारी के दिन हैं।

गुलज़ार एक सफल निर्देशक है, प्रख्यात गीतकार है, प्रिय शायर है, समाज का और समाज द्वारा सम्मानित सदस्य है, जादू जगाने वाला लेखक है और सवसे वढ़कर यह कि मानवीय संवंधों को समझने और निभाने वाला नौजवान-बुज़ुर्ग है। मगर सत्य की खोज में जो निकले हैं, उनका सफ़र कभी ख़त्म नहीं होता, क्योंकि सृष्टि की सीमा आज भी निश्चित नहीं हो सकी है। वस, कि एक गहरी गुफ़ा है और रोशनी की तलाश है और मनुष्य स्वयं मशाल वनके चलता

है और हज़ारों साल से उस गुफ़ा में रहने वाले अंधकार को प्रकाशित कर देता है :

गिरा दो पर्दा कि दास्ताँ ख़ाली हो गयी है
गिरा दो पर्दा कि ख़ूबसूरत उदास चेहरे ख़ला में तहलील हो गये हैं
ग़रीब आँखों से रूठकर एक-एक आँसू उतर गया है
आवाज़ें अपने सुरों से उठकर चली गयी हैं।

बस, एक एहसास की ख़ामोशी है, गूँजती है
बस, एक तकमील का अँधेरा है, जल रहा है।

खुद तक पहुँचने के बाद मनुष्य को खुद से आगे जाना होता है। ज्ञान प्राप्त करने के बाद ज्ञान को प्राप्त हो जाना होता है, कि यही तकमील (पूर्णता) की तलाश भी है और तलाश की तकमील भी।

—भूषण बनमाली

एक गीत का जन्म :

मोरा गोरा अंग लई ले

बड़ा अच्छा लगा जब किसी ने कहा : 'सुबह नहाने से पहले तुम्हारा गीत सुना। शाम को फिर ठीक नहाने से पहले सुन लिया। यह गीत क्या तुमने मेरे लिए लिखा है ?'

एक अजीब-सी शर्मिंदगी हुई जब साउंड-रिकार्डिस्ट जॉर्ज साहब को यह गीत गाते सुना। काला कहने से शायद बुरा मान जायें, दरअसल जॉर्ज साहब बहुत ही गहरे रंग के साँवले हैं—वह गा रहे थे :

मोरा गोरा अंग लई ले

इस गीत का जन्म वहाँ से शुरू हुआ जब विमल-दा (विमल राय) और सचिन-दा (एस०डी० बर्मन) ने 'सिचुएशन' समझायी। कल्याणी (नूतन) जो मन-ही-मन विकास (अशोक कुमार) को चाहने लगी है, एक रात चूल्हा-चौका समेट-कर गुनगुनाती हुई बाहर निकल आयी।

"ऐसा 'कैरेक्टर' घर से बाहर जाकर नहीं गा सकता," बिमल-दा ने वहीं रोक दिया।

"बाहर नहीं जायेगी तो बाप के सामने कैसे गायेगी ?" सचिन-दा ने पूछा।

"बाप से हमेशा वैष्णव-कविता सुना करती है, सुना क्यों नहीं सकती ?" बिमल-दा ने दलील दी।

"यह कविता-पाठ नहीं है, दादा, गाना है।"

"तो कविता लिखो। वह कविता गायेगी।"

"गाना घर में घुट जायेगा।"

"तो आँगन में ले जाओ। लेकिन बाहर नहीं जायेगा।"

"बाहर नहीं जायेगा तो हम गाना भी नहीं बनायेगा," सचिन-दा ने भी चेतावनी दे दी।

कुछ इस तरह से 'सिचुएशन' समझायी गयी मुझे। मैंने पूरी कहानी सुनी, देबू से। देबू और सरन दोनों दादा के असिस्टेंट थे। सरन से वे वैष्णव कविताएँ

सुनीं जो कल्याणी बाप से सुना करती थी। बिमल-दा ने समझाया कि रात का वक़्त है, बाहर जाते डरती है, चाँदनी रात में कोई देख न ले। आँगन से आगे नहीं जा पाती।

सचिन-दा ने घर बुलाया और समझाया : चाँदनी रात में डरती है, कोई देख न ले। बाहर तो चली आयी, लेकिन मुड़-मुड़के आँगन की तरफ़ देखती है।

दरअसल, बिमल-दा और सचिन-दा दोनों को मिलाकर ही कल्याणी की सही हालत समझ में आती है।

सचिन-दा ने अगले दिन बुलाकर मुझे धुन सुनायी :

ललल ला ललल लला ला

गीत के पहले-पहले बोल यही थे। पंचम (आर० डी० बर्मन) ने थोड़ा-सा संशोधन किया :

ददद दा ददा ददा दा

सचिन-दा ने फिर गुनगुनाकर ठीक किया :

ललल ला ददा दा लला ला

गीत की पहली सूरत समझ में आयी। कुछ ललल ला और कुछ ददद दा—मैं सुर-ताल से बहरा भौंचक्का-सा दोनों को देखता रहा। जी चाहा, मैं अपने बोल दे दूँ :

तता ता ततला तता ता

सचिन-दा कुछ देर हार्मोनियम पर धुन बजाते रहे और आहिस्ता-आहिस्ता मैंने भी कुछ गुनगुनाने की कोशिश की। टूटे-टूटे-से शब्द आने लगे :

दो-चार...दो-चार...दुई-चार पग पे अँगना—
दुई-चार पग...बैरी कंगना छनक ना—

ग़लत-सलत सतरों के कुछ बोल बन गये :

बैरी कंगना छनक ना
म्रोहे कोसों दूर लागे
दुई-चार पग पे अँगना—

सचिन-दा ने अपनी धुन पर गाकर परखे, और यूँ धुन की बहर हाथ में आ गयी।

चला आया। गुनगुनाता रहा। कल्याणी के मूड सोचता रहा। कल्याणी के ख़याल क्या होंगे ? कैसा महसूस किया होगा ? हाँ, एक बात जिक्र के क़ाबिल है। एक ख़याल आया, चाँद से मिन्नत करके कहेगी :

मैं पिया को देख आऊँ
जरा मुँह फिराई ले चंदा

फ़ौरन ख़याल आया, शैलेन्द्र यही ख़याल बहुत अच्छी तरह एक गीत में कह चुके हैं :

दम-भर को जो मुँह फेरे—ओ चंदा—

मैं उनसे प्यार कर लूँगी
बातें हजार कर लूँगी—

कल्याणी अभी तक चाँद को देख रही थी। चाँद बार-बार बदली हटाकर झाँक रहा था, मुसकरा रहा था। जैसे कह रहा हो, कहाँ जा रही हो ? कैसे जाओगी ? मैं रोशनी कर दूँगा। सब देख लेंगे। कल्याणी चिढ़ गयी। चिढ़के गाली दे दी :

तोहे राहू लागे बैरी
मुसकाये जी जलाई के

चिढ़के गुस्से में वहीं बैठ गयी। सोचा, वापिस लौट जाऊँ। लेकिन मोह, बाँह से पकड़कर खींच रहा था। और लाज, पाँव पकड़कर रोक रही थी। कुछ समझ में नहीं आया, क्या करे ? किधर जाये ? अपने ही आपसे पूछने लगी :

कहाँ ले चला है मनवा
मोहे बावरी बनाई के

गुमसुम कल्याणी बैठी रही। बैठी रही, सोचती रही, काश, आज रोशनी न होती। इतनी चाँदनी न होती। या मैं ही इतनी गोरी न होती कि चाँदनी में छलक-छलक जाती। अगर साँवली होती तो कैसे रात में ढँकी-छुपी अपने पिया के पास चली जाती।

लौट आयी बेचारी कल्याणी, वापस घर लौट आयी। यही गाते गुनगुनाते :

मोरा गोरा अंग लई ले
मोहे श्याम रंग दई दे।

—गुलजार

भाव-गीत

मोरा गोरा अंग लई ले
मोहे श्याम रंग दई दे
छुप जाऊँगी रात ही में
मोहे पी का संग दई दे

इक लाज रोके पैयाँ
इक मोह खींचे बैयाँ
जाऊँ किधर, न जानूँ
हमका कोई बताई दे

बदरी हटा के चंदा
चुपके से झाँके चंदा
तोहे राहू लागे बैरी
मुसकाये जी जलाई के

कुछ खो दिया है पाई के
कुछ पा लिया गँवाई के
कहाँ ले चला है मनवा
मोहे बावरी बनाई के

बंदिनी

गंगा आये कहाँ से, गंगा जाये कहाँ रे
लहराये पानी में जैसे, धूप-छाँव रे

रात कारी दिन उजियारा
मिल गये दोनों साये
साँझ ने देखो रंग-रूप के
कैसे भेद मिटाये रे
गंगा आये कहाँ से, गंगा जाये कहाँ रे
लहराये पानी में जैसे, धूप-छाँव रे

काँच कोई, माटी कोई
रंग - विरंगे प्याले
प्यास लगे तो एक बराबर
जिसमें पानी डाले रे
गंगा आये कहाँ से, गंगा जाये कहाँ रे
लहराये पानी में जैसे, धूप-छाँव रे

काबुली वाला

रोज़ अकेली आये
रोज़ अकेली जाये
चाँद कटोरा लिये भिखारन रात

मोतियों जैसे तारे
आँचल में हैं सारे
जाने फिर क्या माँगे भिखारन रात

जोगन जैसी लागे
न सोये न जागे
गली-गली में जाये भिखारन रात

रोज़ लगाये फेरा
है कोई नन्हा सवेरा
गोद में भर दो आयी भिखारन रात

रोज़ अकेली आये
रोज़ अकेली जाये
चाँद कटोरा लिये भिखारन रात

मेरे अपने

तुम पुकार लो, तुम्हारा इंतज़ार है
ख्वाब चुन रही है रात, बेक़रार है
तुम्हारा इंतज़ार है

होंठ पे लिये हुए दिल की बात हम
जागते रहेंगे और कितनी रात हम

मुख़्तसर-सी बात है तुमसे प्यार है
तुम्हारा इंतज़ार है

दिल बहल तो जायेगा इस ख़याल से
हाल मिल गया तुम्हारा अपने हाल से

रात यह क़रार की, बेक़रार है
तुम्हारा इंतज़ार है

तुम पुकार लो, तुम्हारा इंतज़ार है...

ख़ामोशी

हमने देखी है उन आँखों की महकती ख़ुशबू
हाथ से छू के इसे रिश्तों का इलज़ाम न दो
सिर्फ़ एहसास है यह, रूह से महसूस करो
प्यार को प्यार ही रहने दो, कोई नाम न दो

प्यार कोई बोल नहीं, प्यार आवाज़ नहीं
एक ख़ामोशी है, सुनती है, कहा करती है
न यह बुझती है, न रुकती है, न ठहरी है कहीं
नूर की बूँद है, सदियों से बहा करती है

हमने देखी है उन आँखों की...

मुसकराहट-सी खिली रहती है आँखों में कहीं
और पलकों पे उजाले-से झुके रहते हैं
होंठ कुछ कहते नहीं, काँपते होंठों पे मगर
कितने ख़ामोश-से अफ़साने रुके रहते हैं

हमने देखी है उन आँखों की...

खामोशी

वह शाम कुछ अजीब थी
यह शाम भी अजीब है
वह कल भी पास-पास थी
वह आज भी क़रीब है

झुकी हुई निगाह में
कहीं मेरा ख़याल था
दबी-दबी हँसी में इक
हसीन-सा गुलाल था

मैं सोचता था मेरा नाम
गुनगुना रही है वह
न जाने क्यों लगा मुझे
कि मुसकरा रही है वह

मेरा ख़याल है अभी
झुकी हुई निगाह में
खिली हुई हँसी भी है
दबी हुई-सी चाह में

मैं जानता हूँ मेरा नाम
गुनगुना रही है वह
यही खयाल है मुझे
कि साथ आ रही है वह

वह शाम भी अजीब थी
यह शाम भी अजीब है

खामोशी

आजकल पाँव ज़मीं पर नहीं पड़ते मेरे
बोलो, देखा है कभी तुमने मुझे उड़ते हुए

जब भी थामा है तेरा हाथ तो देखा है
लोग कहते हैं कि बस हाथ की रेखा है

हमने देखा है दो तक़दीरों को जुड़ते हुए
आजकल पाँव ज़मीं पर नहीं पड़ते मेरे...

नींद-सी रहती है, हलका-सा नशा रहता है
रात-दिन आँखों में इक चेहरा बसा रहता है

पर-लगी आँखों को देखा है कभी उड़ते हुए
आजकल पाँव ज़मीं पर नहीं पड़ते मेरे...

जाने क्या होता है, हर इक बात पे कुछ होता है
दिन में कुछ होता है और रात में कुछ होता है

थाम लेना, जो कभी देखो हमें उड़ते हुए
आजकल पाँव ज़मीं पर नहीं पड़ते मेरे
बोलो, देखा है कभी तुमने मुझे उड़ते हुए

घर

आपकी आँखों में कुछ महके हुए-से राज़ हैं
आपसे भी ख़ूबसूरत आपके अंदाज़ हैं

जव हिलें तो मोगरे के फूल खिलते हैं कहीं
आपकी आँखों में क्या साहिलभी मिलते हैं कहीं
आपकी ख़ामोशियाँ भी आपकी आवाज़ हैं
आपकी आँखों में कुछ...

आपकी बातों में फिर कोई शरारत तो नहीं
बेवजह तारीफ़ करना आपकी आदत तो नहीं

आपकी बदमाशियों के यह नये अंदाज़ हैं
आपकी आँखों में कुछ...

घर

तेरे बिना
जिया जाये ना
बिन तेरे, तेरे बिन, साजना, साँस में साँस आये ना
तेरे बिना
जिया जाये ना

जब भी खयालों में तू आये
मेरे बदन से खुशबू आये
महके बदन में रहा न जाये

रहा जाये ना
तेरे बिना...

रेशमी रातें रोज़ न होंगी
ये सौग़ातें रोज़ न होंगी
ज़िंदगी तुझ बिन रास न आये

रास आये ना
तेरे बिना...

घर

फिर वही रात है
रात है ख्वाब की
देखा करेंगे तुम्हें
फिर वही रात है
रात है ख्वाब की

मासूम-सी नींद में
जब कोई सपना चले
हमको बुला लेना तुम
पलकों के पर्दे तले

यह रात है ख्वाब की
फिर वही रात है

काँच के ख्वाब हैं
आँखों में चुभ जायेंगे
पलकों में लेना इन्हें
आँखों में रुक जायेंगे

यह रात है ख्वाब की
फिर वही रात है
रात है ख्वाब की
देखा करेंगे तुम्हें

घर

एक अकेला इस शहर में
रात में और दोपहर में

आब-ओ-दाना ढूँढता है
आशियाना ढूँढता है

दिन ख़ाली-ख़ूली बर्तन है
और रात है जैसे अंधा कुआँ
इन सूनी अँधेरी आँखों में
आँसू की जगह आता है धुआँ
जीने की वजह तो कोई नहीं
मरने का बहाना ढूँढता है

एक अकेला इस शहर में...

इन उम्र से लंबी सड़कों को
मंज़िल पे पहुँचते देखा नहीं
बस दौड़ती-फिरती रहती हैं
हमने तो ठहरते देखा नहीं
इस अजनबी-से शहर में
जाना-पहचाना ढूँढता है

एक अकेला इस शहर में...

घरौंदा

दो दिवाने शहर में
रात में या दोपहर में
आब-ओ-दाना ढूँढते हैं
इक आशियाना ढूँढते हैं

इन भूल-भुलैयाँ गलियों में
अपना भी कोई इक घर होगा
अम्वर पे खुलेगी खिड़की या
खिड़की पे खुला अम्बर होगा
अस्मानी रंग की आँखों में
बसने का बहाना ढूँढते हैं
दो दिवाने शहर में......

जब तारे ज़मीं पर जलते हैं
आकाश ज़मीं हो जाता है
उस रात नहीं फिर घर जाता
वह चाँद यहीं सो जाता है
पल-भर के लिए इन आँखों में
हम एक ज़माना ढूँढते हैं
दो दिवाने शहर में.........

घरौंदा

घुँघटा गिरा है, ज़रा घुँघटा उठा दे रे
कोई मेरे माथे की बिंदिया सजा दे रे
मैं दुल्हिन-सी लगती हूँ, दुल्हन बना दे रे

आँखों में रात का काजल लगाये
मैं आँगन में ठंडे सवेरे बिछा दूँ
जो पैरों में मेंहदी की अग्नि लगा दे
घुँघटा गिरा है, ज़रा घुँघटा उठा दे रे

न चिट्ठी ही आयी न संदेसा आया
हर आहट पे आने का अंदेसा आया
कोई झूठी-मूठी किवड़िया हिला दे रे
घुँघटा गिरा है, ज़रा घुँघटा उठा दे रे

पलकों की छाँव में

लड़खड़ाने दो मुझे, होश में रुसवाई है
मैं तमाशा तो नहीं, दुनिया तमाशाई है
लड़खड़ाने दो मुझे...

ज़िंदगी ज़हर सही, ज़हर का प्याला भर लो
मौत के बाद सही, मिलने का वादा कर लो

हमने भी कौन-सी जीने की क़सम खाई है
लड़खड़ाने दो मुझे...

मैं अगर गिरने लगूँ, तुम न सँभाला देना
कोई न जाने, मेरे हाथों में पियाला देना

लोगों को कहने देना, कोई सौदाई है
लड़खड़ाने दो मुझे...

पलकों की छाँव में

दो अकेले चल रहे हैं
रात अकेली, चाँद अकेला
हमसफ़र दो अजनबी-से
रात अकेली, चाँद अकेला

आवारा सफ़र
जाये कौन कहाँ
वीराँ है ज़मीं
वीराँ आस्माँ
दो किनारे चल रहे हैं
रात अकेली, चाँद अकेला

आवाज़ों में है
सन्नाटों की धुन
नज़रों की ज़ुबाँ
ख़ामोशी है सुन
दो इशारे चल रहे हैं
रात अकेली, चाँद अकेला

सन्नाटा

घिर-घिर बरसें सावनी अँखियाँ
साँवरिया घर आ
तेरे संग सब रंग बसंती
तुझ बिन सब सूखा

रेशमी बुँदियाँ तन पे मारें
छेड़ करें भीगी बौछारें

मानत ना, मानत ना जियरा
घिर-घिर बरसें...

बावरी बिरहन कल न पाये
पल बीते जैसे जुग जाये

कैसे कटे बिरहा
घिर-घिर बरसें...

आशीर्वाद

इक था बचपन
छोटा-सा नन्हा-सा बचपन
इक था बचपन

बचपन के इक बाबू जी थे
अच्छे-सच्चे बाबू जी थे
दोनों का सुंदर था बंधन
इक था बचपन

टहनी पर चढ़के जब फूल बुलाते थे
हाथ उसके छोटे, टहनी तक न जाते थे
बचपन के नन्हे हाथ उठाकर वह
फूलों से हाथ मिलाते थे
इक था बचपन...

चलते-चलते जाने कब इन राहों में
बाबू जी बस गये बचपन की बाहों में
मुट्ठी में बंद हैं वह सूखे फूल अभी
खुशबू है जीने की चाहों में
इक था बचपन...

मेरे होंठों पे उनकी आवाज़ भी है
साँसों में विश्वास भी है
जाने किस मोड़ पे मिल जायेंगे वह
पूछेंगे बचपन की असास भी है
इक था बचपन...

आशीर्वाद

मितवा रे—भूल गये थे राहें
मितवा
लाखों रस्ते एक मुसाफ़िर
जाने कहाँ थीं तेरी राहें
मितवा

लंबे सूने वीरानों में
कितनी बार रुके दिलवाले
धूप में देखीं छाँव की चोटें
छाँव में देखे धूप के छाले

होंठों पर ही रोक लीं हमने
एक हँसी और सारी आहें
मितवा

एक से एक जुदा था राही
पास थे सारे, संग न कोई
सब रंगों के देखे चेहरे
उन आँखों का रंग न कोई

जिन बाहों में नींद आ जाये
ढूँढ रहे हैं वह ही बाहें
मितवा रे

राहगीर

जनम से बंजारा हूँ बंधु, जनम-जनम बंजारा
कहीं कोई घर न घाट न अँगनारा

जहाँ कहीं ठहर गया दिल, हमने डाले डेरे
रात कहीं नमकीन मिली तो मीठे साँझ-सवेरे

कभी नगरी छोड़ी, साहिल छोड़ा, लिया मँझधारा रे
कहीं कोई घर न...

सोच ने जब करवट बदली, शौक़ ने पर फैलाये
मैंने आशियाँ के तिनके सारे डाल से उड़ाये

कभी रिश्ते तोड़े, नाते तोड़े, छोड़ा कूल-किनारा रे
कहीं कोई घर न...

राहगीर

हवाओं पे लिख दो : हवाओं के नाम
हम अनजान परदेसियों का सलाम
हवाओं पे लिख दो...

यह, किसके लिए है; बता, किसके नाम
ओ पंछी, यह तेरा, सुरीला सलाम
हवाओं पे लिख दो...

शाख़ पर जब धूप आयी
हाथ छूने के लिए
छाँव छम् से नीचे कूदी
हँसके बोली, आइये
यहाँ सुबह से खेला करती है शाम
हवाओं पे लिख दो...

चुलबुला यह पानी अपनी
राह बहना भूल कर
लेटे - लेटे आईना
चमका रहा है फूल पर
ये भोले-से चेहरे हैं, मासूम नाम
हवाओं पे लिख दो : हवाओं के नाम
हम अनजान परदेसियों का सलाम

दो दूनी चार

कोई होता, जिसको अपना, हम अपना कह लेते, यारो
पास नहीं तो दूर ही होता, लेकिन कोई मेरा अपना

आँखों में नींद न होती
आँसू ही तैरते रहते
ख्वाबों में जागते हम रात-भर
कोई तो ग़म अपनाता, कोई तो साथी होता
कोई होता, जिसको अपना, हम अपना कह लेते, यारो...

भूला हुआ कोई वादा
बीती हुई कुछ यादें
तनहाई दोहराती है रात-भर
कोई दिलासा होता, कोई तो अपना होता
पास नहीं तो दूर ही होता, लेकिन कोई मेरा अपना।

मेरे अपने

दिन जा रहे हैं या रातों के साये
अपनी सलीबें ख़ुद ही उठाये

जब कोई डूबा
रातों का तारा
कोई सवेरा
वापस न आया
वापस जो आये, वीरान साये
दिन जा रहे हैं या रातों के साये

जीना तो कोई
मुश्किल नहीं था
मगर डूब जाने को
साहिल नहीं था
साहिल से कोई अब तो बुलाये
दिन जा रहे हैं या रातों के साये

साँसों की डोरी
टूटे न टूटे
ज़रा ज़िंदगी से
दामन तो छूटे
कोई ज़िंदगी के हाथ न आये
दिन जा रहे हैं या रातों के साये

दूसरी सीता

बोले रे पपीहरा
पपीहरा
बोले रे पपीहरा

इक घन बरसे, इक मन प्यासा
इक मन प्यासा, इक मन तरसे
बोले रे पपीहरा...

पलकों पर इक बूँद सजाये
बैठी हूँ सावन ले जाये
जाये, पी के देश में बरसे
इक मन प्यासा, इक मन तरसे
बोले रे पपीहरा...

सावन जो संदेशा लाये
मेरी आँख के मोती पाये
दान मिले बाबुल के घर से
इक मन प्यासा, इक मन तरसे
बोले रे पपीहरा...

गुड्डी

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना...

भेद-भाव अपने दिल से साफ़ कर सकें
दोस्तों से भूल हो तो माफ़ कर सकें

झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना...

मुश्किलें पड़ें तो हम पे, इतना करम कर
साथ दें तो धरम का, चलें तो धरम पर

खुद पे हौसला रहे, बदी से न डरें
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना...

गुड्डी

मेंहा बरसने लगा है आज की रात
आज की रात मेंहा बरसने दो

पत्ते-पत्ते पर बूंदें बरसेंगी
डाली-डाली पर झूमेगा सावन
प्यासे होंठों को चूमेगी बारिश
आज आँखों में फूलेगा सावन

धुआँ-धुआँ-सा हो रहा है जहाँ
आज दोनों जहाँ सुलगने दो
आज की रात मेंहा बरसने दो...

आज चाहे बरसे कहीं भी रे पानी
चाहे कितना भी मुझसे दूर होगा
मेरे घर पे बरसी बदली से
कोई रिश्ता कहीं ज़रूर होगा

मोती-मोती बिखर रहा है गगन
पानी-पानी है सब पिघलने दो
मेंहा बरसने लगा है आज की रात
आज की रात मेंहा बरसने दो...

मुसाफ़िर हूँ, यारो
न घर न ठिकाना
मुझे चलते जाना है
बस चलते जाना

एक राह रुक गयी, तो और जुड़ गयी
मैं मुड़ा तो साथ-साथ राह मुड़ गयी

हवा के परों पर
मेरा आशियाना
मुसाफ़िर हूँ, यारो...

दिन ने हाथ थाम कर इधर बिठा लिया
रात ने इशारे से उधर बुला लिया

सुबह से, शाम से
मेरा दोस्ताना
मुसाफ़िर हूँ, यारो..

परिचय

बीती न बितायी रैना
बिरहा की जायी रैना
भीगी हुई अँखियों ने
लाख बुझायी रैना

बीती हुई बतियाँ कोई दोहराये
भूले हुए नामों से कोई तो बुलाये
चाँद की बिंदी वाली
बिंदी वाली रतियाँ
जागी हुई अँखियों में
रात न आयी रैना
बीती न बितायी रैना...

युग आते हैं और युग जायें
छोटी-छोटी यादों के पल नहीं जायें
झूठ से काली लागें
लागें काली रतियाँ
रूठी हुई अँखियों ने
लाख मनायी रैना
बीती न बितायी रैना

परिचय

ओ, माँझी रे,
अपना किनारा
नदिया की धारा है

साहिलों पे बहने वाले
कभी सुना तो होगा कहीं
काग़ज़ों की कश्तियों का
कोई किनारा होता नहीं

कोई किनारा, जो किनारे से मिले
वह अपना किनारा है
ओ माँझी रे...

पानियों में बह रहे हैं
कई किनारे टूटे हुए
रास्तों में मिल गये हैं
सभी सहारे छूटे हुए

कोई सहारा, मँझधार में मिले तो
अपना सहारा है
ओ माँझी रे...

खुशबू

घर जायेगी
तर जायेगी
डोलिया चढ़ जायेगी

मेंहदी लगाय के रे
काजल सजाय के रे
दुल्हनिया मर जायेगी...

धीरे-धीरे ले के चलना
आँगन से निकलना
कोई देखे न दुल्हन को गली में
दो अँखियाँ झुकाये हुए
घुँघटा गिराये हुए
मुखड़ा छुपाये हुए चली मैं

जायेगी, घर जायेगी
तर जायेगी
डोलिया चढ़ जायेगी...

मेंहदी-मेंहदी खेली थी मैं
तेरी ही सहेली थी मैं

तूने जब कुसुम को चुना था
तूने मेरा नाम कभी आँखों से बुलाया नहीं
मैंने जाने कैसे सुना था
जायेगी, घर जायेगी
तर जायेगी...

खुशबू

दो नैनों में
आँसू भरे हैं
निंदिया कैसे समाये

डूबी-डूबी आँखों में सपनों के साये
रात-भर अपने हैं दिन में पराये

कैसे नैनों में
निंदिया समाये

झूठे तेरे वादों पे वरस विताये
जिंदगी तो काटी, यह रात कट जाये

कैसे नैनों में
निंदिया समाये
दो नैनों में...

खुशबू

मेरा दिल जो मेरा होता
पलकों से पकड़ लेती
होंठों पे उठा लेती
हाथों में ख़ुदा होता

सूरज को मसल कर मैं
चंदन की तरह मलती
सोने का बदन लेकर
कुंदन की तरह जलती

इस गोरे-से चेहरे पर
आईना फ़िदा होता
मेरा दिल...

बरसा है कई बरसों
आकाश समंदर में
इक बूँद है चंदा की
उतरी न समंदर में

दो हाथों की ओक में यह
गिर पड़ता तो क्या होता
हाथों में ख़ुदा होता...

अनुभव

मेरी जाँ,
मुझे जाँ न कहो, मेरी जाँ !

जाँ ना कहो अनजान मुझे
जान कहाँ, रहती है सदा
अनजाने क्या जानें
जान से जाये कौन भला

मेरी जाँ,
मुझे जाँ ना कहो, मेरी जाँ

रूठे सावन बरस गये
कितनी बार इन आँखों से
दो बूँदें ना बरसीं
इन भीगी पलकों से

होंठ झुके जब होंठों पर
साँस लिखे हों साँसों में
दो जुड़वाँ होंठों की
बात कहो आँखों से
मेरी जाँ,
मुझे जाँ ना कहो, मेरी जाँ

अनुभव

हरि, दिन तो बीता, शाम हुई, रात पार करा दे
बीता मेरा काल तो बीता, कूल पार करा दे

मैंने साथ लिया न कोई
दोशाला न लोई
अपने छूटे, सपने छूटे
आशा और छुड़ा दे
हरि, दिन तो बीता, शाम हुई, रात पार करा दे

दाता, तेरे द्वार खड़ी हूँ
माँगूँ मोती दान
बंधु छूटे, बंधन छूटे
छोर पार करा दे
हरि, दिन तो बीता, शाम हुई, रात पार करा दे
बीता मेरा काल तो बीता, कूल पार करा दे

किताब

मेरे साथ चले न साया
धरम नहीं, करम नहीं
जनम गँवाया

मेरे लिए दिन भी अँधेरा
मेरे लिए रात भी लाये न सबेरा

जो दे उजाला, दे सबेरा
वही मेरा हमसाया
धरम नहीं, करम नहीं...

मेरे लिए जगत सौतेला
भरी हुई भीड़ में भी रहा अकेला

जो दे उजाला, दे किनारा
वही मेरा हमसाया
धरम नहीं, करम नहीं
जनम गँवाया

किताब

आने वाला पल, जाने वाला है
हो सके तो इस में
ज़िंदगी बिता दो
पल जो यह जाने वाला है
आने वाला पल...

इक बार यूँ मिली
मासूम-सी कली
खिलते हुए कहा
ख़ुशबाश मैं चली
देखा तो यहीं है
ढूँढा तो नहीं है
पल जो यह जाने वाला है
आने वाला पल...

इक बार वक़्त से
लम्हा गिरा कहीं
वहाँ दास्ताँ मिली
लम्हा कहीं नहीं

थोड़ा-सा हँसाके
थोड़ा-सा रुलाके
पल जो यह जाने वाला है
आने वाला पल जाने वाला है।

गोलमाल

इक बात कहूँ, गर मानो तुम
सपनों में न आना, जानो तुम
मैं नींद में उठकर चलती हूँ
जब देखती हूँ, सच मानो तुम

कल भी हुआ कि तुम गुज़रे थे पास से
थोड़े-से अनमने, थोड़े उदास-से
भागी थी मनाने नींद में लेकिन
सोफ़े से गिर पड़ी
इक बात कहूँ...

परसों की बात है तुमने बुलाया था
तुम्हारे हाथों से चेहरा छुपाया था
चूमा था हाथ को नींद में लेकिन
पाया पलंग का था
इक बात कहूँ...

उस दिन भी रात को, तुम ख़्वाब में मिले
और ख़ामख़ाह केवल करते रहे गिले
काश, यह नींद और ख़्वाब के यूँही
चलते रहें सिलसिले
इक बात कहूँ, गर मानो तुम
सपनों में न आना, जानो तुम

गोलमाल

किसी आसमाँ पे तो साहिल मिलेगा
मैं लाने वही आसमाँ जा रहा हूँ
जहाँ पे ज़मीं आसमाँ छू रही है
वहीं जा रहा हूँ, वहाँ जा रहा हूँ

कई बार देखी हैं सिंदूरी शामें
उफ़क़ से परे जगमगाती हुई
कई बार ख़ामोशियों में सुना है
गुज़रती हैं मुझको बुलाती हुई

जहाँ पे मिले वह जहाँ, जा रहा हूँ
मैं लाने वही आसमाँ जा रहा हूँ

बहुत बार सोचा यह सिंदूरी रोग़न
जहाँ पे खड़ा हूँ वहीं पे बिछा दूँ
यह सूरज के ज़र्रे ज़मीं पर मिलें तो
इक और आसमाँ इस ज़मीं पे बिछा दूँ

जहाँ पे मिले वह जहाँ, जा रहा हूँ
मैं लाने वही आसमाँ जा रहा हूँ

कशिश

एक ही ख़्वाब कई बार देखा है मैंने

तूने साड़ी में उड़स ली हैं मेरी चाबियाँ घर की
और चली आयी है बस, यूँ ही मेरा हाथ पकड़कर
एक ही ख़्वाव...

मेज़ पर फूल सजाते हुए देखा है कई बार
और बिस्तर से कई बार जगाया भी है तुझको
चलते-फिरते तेरे क़दमों की वह आहट भी सुनी है
एक ही ख़्वाब...

गुनगुनाती हुई निकली है नहाके जब भी
अपने भीगे हुए बालों से टपकता पानी
मेरे चेहरे पे छिटक देती है तू टिकू की बच्ची
एक ही ख़्वाब...

ताश के पत्तों पर लड़ती है कभी खेल में मुझसे
और कभी लड़ती भी है ऐसे कि बस खेल रही है
और आग़ोश में नन्हे को लिये...

'विल यू शट अप' ?

और जानती हो, टिकू, जब तुम्हारा यह ख़्वाब देखा था
अपने बिस्तर पे मैं उस वक़्त पड़ा जाग रहा था

किनारा

नाम गुम जायेगा, चेहरा यह बदल जायेगा
मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे

वक़्त के सितम कम हसीं नहीं
आज हैं यहाँ कल कहीं नहीं
वक़्त से परे अगर मिल गये कहीं
मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे

जो गुज़र गयी, कल की बात थी
उम्र तो नहीं, एक रात थी
रात का सिरा, फिर मिले कहीं
मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे

दिन ढले जहाँ, रात पास हो
ज़िंदगी की लौ, ऊँची कर चलो
याद आये गर कभी, जी उदास हो
मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे

नाम गुम जायेगा, चेहरा यह बदल जायेगा
मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे

किनारा

अबके ना सावन बरसे
अबके बरस तो बरसेंगी अँखियाँ
अबके ना सावन बरसे

जाने कैसे अबके यह मौसम बीते
बीतेगी जो तेरे बिन वह कम बीते
तेरे बिना सावन सूखे
तेरे बिना अब तो यह मन तरसे
अब के ना सावन बरसे

जाने कब आये दिन, कब ढल जाये
तेरे बिना अँखियों से रात न जाये
तेरे बिना अब तो यह दिन तरसे
अबके ना सावन बरसे
अबके बरस तो बरसेंगी अँखियाँ
अबके ना सावन बरसे

किनारा

मीठे बोल बोले, बोले पायलिया
मीठे बोल बोले
छुम-छनन बोले, झनक-झन बोले
मीठे बोल बोले, बोले पायलिया

पग-पग नाचे रे
घुँघरू की दासी
इक पग राधा जैसी
इक पग मीरा जैसी
साँवरे की बोली, बोले पायलिया
मीठे बोल बोले...

नैनों की बाँसुरी
कोई सुनाये
अँखियों की ज्योति से
ज्योति जलाये
बावरी-सी डोले, डोले पायलिया
मीठे बोल बोले, बोले पायलिया

किनारा

कोई नहीं है कहीं
सपनों में क्यों खो गयीं
बोलो ना
बोलो ना
कोई नहीं है कहीं

फिर आँख नम हो गयी
फिरकोई यादआ गया है
रोशनी कम हो गयी
किनारा मिलेगा यहीं रे
कोई नहीं है कहीं

बात थी ख़्वाब की
ख़्वाब में बीत चुकी है
ख़्वाब दोहराते नहीं
ज़िंदगी सपना नहीं रे
कोई नहीं है कहीं
कोई नहीं है कहीं

किनारा

चाँद चुराके लाया हूँ
चल बैठें चर्च के पीछे
न कोई देखे, न पहचाने
बैठें पेड़ के नीचे

कल बापू जाग गये थे
मेरी लाज की सोचो

अरे, जो होना था कल हुआ था
आज तो आज की सोचो

चाँद चुराके लायी हूँ
चल बैठें चर्च के पीछे

चल दरिया पर कश्ती लेकर
दूर कहीं वह जायें
ढूंढ न पायें बस्ती वाले
साहिल से कह जायें

चाँद चुराके लाया हूँ
चल बैठें चर्च के पीछे
न कोई देखे, न पहचाने
बैठें पेड़ के नीचे

देवता

मैं तो कारे बदरवा से हारी
गरजे तो रात जगाये
बरसे तो आग लगाये
मैं तो कारे बदरवा से हारी

अगर माँगा कभी तुमसे
तो बस इतना ही माँगेंगे
तेरे पहलू में सोये हैं
तेरे पहलू में जागेंगे
बादरवा बिजली चमकाये
बरसे तो आग लगाये
मैं तो कारे बदरवा से हारी

नहीं, रूठे नहीं, बाबू
तुम्हें पसंद करते हैं
तुम्हें जब देखना होता है
आँखें बंद करते हैं
बादरवा घिर-घिर आये
बरसे तो आग लगाये
मैं तो कारे बदरवा से हारी

देवता

गुलमोहर गर तुम्हारा नाम होता
मौसमे-गुल को हँसाना भी हमारा काम होता
गुलमोहर गर तुम्हारा नाम होता

आयेंगी बहारें तो, अबके उन्हें कहना ज़रा
इतना सुनें, मेरे गुल बिना, उनका कहाँ,
बहार नाम होता
गुलमोहर गर तुम्हारा...

शाम के गुलाबी-से
आँचल में
दीया जला
है चाँद का
मेरे उन बिना
उसका कहाँ
चाँद नाम होता

गुलमोहर गर तुम्हारा नाम होता
मौसमे-गुल को हँसाना भी हमारा काम होता

देवता

जब एक क़ज़ा से गुज़रो तो
इक और क़ज़ा मिल जाती है
मरने की घड़ी मिलती है अगर
जीने की सज़ा मिल जाती है

इस दर्द के बहते दरिया में
हर ग़म है मरहम, कोई नहीं
हर दर्द का ईसा मिलता है
ईसा की मरियम कोई नहीं
साँसों की इजाज़त मिलती नहीं
जीने की रज़ा मिल जाती है

मैं वक़्त का मुजरिम हूँ लेकिन
इस वक़्त ने नया इंसाफ़ किया
जब तक जीते हो, जलते रहो
जल जाओ तो कहना माफ़ किया
जल जाये ज़रा-सी चिंगारी
तो और हवा मिल जाती है

कुछ ऐसे क़िस्मत वाले हैं
कि जिनकी क़िस्मत होती नहीं
हँसना भी मना होता है उन्हें
रोने की इजाज़त होती नहीं
बेनाम-सा मौसम जीते हैं
बेरंग फ़ज़ा मिल जाती है

देवता

बस एक चुप-सी लगी है, नहीं उदास नहीं
कहीं पे साँस रुकी है, नहीं उदास नहीं

कोई अनोखी नहीं ऐसी ज़िंदगी लेकिन
मिली जो, खूब मिली है, नहीं उदास नहीं

सहर भी, रात भी, दोपहर भी मिली लेकिन
हमीं ने शाम चुनी है, नहीं उदास नहीं

बस एक चुप-सी लगी है, नहीं उदास नहीं
कहीं पे साँस रुकी है, नहीं उदास नहीं

सन्नाटा

जाने क्या सोचकर नहीं गुज़रा
एक पल रात-भर नहीं गुज़रा

अपनी तनहाई का औरों से न शिकवा करना
तुम अकेले ही नहीं हो सभी अकेले हैं

यह अकेला सफ़र नहीं गुज़रा
जाने क्या सोचकर नहीं गुज़रा

दो घड़ी जीने की मोहलत तो मिली है सबको
तुम भी मिल जाओ घड़ी-भर को यह कम होता है

इक घड़ी का सफ़र नहीं गुज़रा
जाने क्या सोचकर नहीं गुज़रा
एक पल रात-भर नहीं गुज़रा

किनारा

कितनी अनजानी सूरतें लेकर
लब पे जाने-से नाम आते हैं
किसको मालूम था मुहब्बत में
ऐसे-ऐसे मुक़ाम आते हैं

जाने कहाँ देखा है
कहाँ देखा है तुम्हें
जागी-जागी आँखों के—
सपनों में
कहाँ देखा है तुम्हें

जमुना किनारे कभी
भीगी-भीगी चोली में
साँवरे के संग कभी
गोपियों की टोली में

कहाँ-कहाँ पूछा है
कहाँ-कहाँ ढूँढा है
कहाँ देखा है तुम्हें

रावी के किनारे जहाँ
हीर की सहेलियाँ
पूछती हैं रोज़ वही
प्यार की पहेलियाँ

कहाँ देखा है तुम्हें

नील के किनारे कभी
शाम के उजालों में
ज़ुलेख़ा पुकारा है
तुमको ख़यालों में

कहाँ-कहाँ पूछा है
कहाँ-कहाँ ढूँढा है
कहाँ देखा है तुम्हें

बीवी और मकान

सावन में बरखा सताये
पल-पल, छिन-छिन बरसे
तेरे लिए मन तरसे

तुही बता दे, साजन, समझ न आये
अगन लगाये कहीं अगन बुझाये
बरखा रसीली जैसे तेरी हँसी हो

हँस दे ज़रा, रस बरसे
तेरे लिए मन तरसे

आज तो बरसने दे
इन बादलों को
गोरी मिली है कोई
इन सावनों को

बरखा रँगीली, जैसे नयन हों तेरे

नयन मिला, रंग बरसे
तेरे लिए मन तरसे

बीवी और मकान

ऐसे दाँतों में उँगली दबाओ नहीं
रात जागी हो हमसे छुपाओ नहीं

कोई सपने में आता रहा रात-भर
न मैं सोयी, न जागी, सताओ नहीं

कौन था, कैसा था, बताओ ना ?

कोई अनजान-सी एक पहचान थी
मेरी आँखों में झुककर बुलाती रही
न मैं बोली, न मैं जागी
सिर्फ़ साँसों की आवाज़ आती रही
एक आग़ोश में क़ैद थी रात-भर
लो, बता तो दिया अब सताओ नहीं

तुमको सपनों की सौगंध, बनाओ नहीं
रात जागी हो हमसे छुपाओ नहीं

जिस्म जलता रहा, जैसे खुशबू जले
साँस होंठों पे आ के सुलगते रहे
न जली मैं, न बुझी मैं

मेरे होंठों पे सावन बरसते रहे
शौक़ मलता रहा एड़ियाँ रात-भर
लो, बता तो दिया अब सताओ नहीं

जाओ-जाओ हमें यूं बनाओ नहीं
दिल दिया है किसी को छुपाओ नहीं

बीवी और मकान

सहमा-सहमा डरा-सा रहता है
जाने क्यों जी भरा-सा रहता है

ज़िंदगी जैसे ख़ाली कुआँ है
दूर तक सिर्फ़ धुआँ धुआँ है

जल गया सब, ज़रा-सा रहता है

दर्द होता है ऐसे जीने में
साँस बजती है ख़ाली सीने में

जाने क्यों मन मरा-सा रहता है
सहमा-सहमा डरा-सा रहता है
जाने क्यों जी भरा-सा रहता है

देवदास

आज बिछुड़े हैं, कल का डर भी नहीं
ज़िंदगी इतनी मुख़्तसर भी नहीं

ज़ख़्म दिखते नहीं अभी लेकिन
ठंडे होंगे तो दर्द निकलेगा
तैश उतरेगा वक़्त का जब भी
चेहरा अंदर से ज़र्द निकलेगा
आज बिछुड़े हैं...

कहने वालों का कुछ नहीं जाता
सहने वाले कमाल करते हैं
कौन ढूंढे जवाब दर्दों के
लोग तो बस सवाल करते हैं
आज बिछुड़े हैं...

कल जो आयेगा जाने क्या होगा
बीत जायें जो कल, नहीं आते
वक़्त की शाख़ तोड़ने वालो
टूटी शाख़ों पे फल नहीं आते
आज बिछुड़े हैं...

कच्ची मिट्टी है, दिल भी, इंसाँ भी
देखने ही में सख़्त लगता है
आँसू पोंछे तो आँसुओं के निशाँ
ख़ुश्क होने में वक़्त लगता है
आज बिछुड़े हैं, कल का डर भी नहीं
ज़िंदगी इतनी मुख़्तसर भी नहीं

थोड़ी सी बेवफाई

आये
आये रे
नन्हे-मुन्ने राजा को निंदिया सुलाये
भोली-भाली अँखियों पे
निंदिया की गुड़िया-सी सपने सजाये रे
आये
आये रे

माँ की गोदी से तुझको
काश परियाँ ले जाएँ
और देने को क्या है
झूठी-मूठी दुआएँ
कोई आये, ले जाये
नन्हे-मुन्ने राजा को निंदिया सुलाये

जा, जहाँ कोई तेरा
औ' पराया न होगा
मेरी आँखों का
मेरी वातों का तुझ पर
यह साया न होगा

कोई आये, ले जाये
नन्हे-मुन्ने राजा को निंदिया सुलाये

दूसरी सीता

राख उड़ायी धूप ने
दिन में साँझ करी
कोख जलाय के माई की
माटी बाँझ करी

लोहू जनमे माइयाँ
जिन लोहा जाये लगे
जड़ से सूखें डारियाँ
जिन माँ की हाय लगे

काई खा के जल मरे
बीज को श्राप लगे
कुछ न उपजे माटी में
जिस माटी पाप लगे

घोर अँधेरा बीजियो
ता काला नाग फले
नास करे विनाशनी
बिन पैराँ आग चले

गहराई

दबे लवों से कभी जो कोई सलाम ले ले
मैं आस्माँ की तरह से गूँजूँ जो नाम ले ले
दबे लवों से...

सुनी थी कहानी कवियों से
भँवरे मिलेंगे कलियों से
मिलेंगे सुनहरे शहज़ादे
उजली-सुनहरी परियों से
उजले रंग लिये, खिलते अंग लिये
नील परी से कम तो नहीं, आये कोई थाम ले
दबे लवों से...

अजी इश्क़ पे ज़ोर नहीं है
इक बात चली थी 'ग़ालिब' से
हमें हुस्न पे ज़ोर नहीं है
कह दो यह हमारी जानिब से

सोचा था जो अंग खिलेंगे
बाँधेगा कोई गजरों से
मानेंगे, सुनेंगे जो कहेगा
दो रेशमी-सी नज़रों से

दिल भी हाज़िर है, जाँ भी हाज़िर है
दिल और जाँ के क़ाबिल कोई, आये ज़रा थाम ले
दबे लबों से...

बीवी और मकान

हज़ार राहें, मुड़के देखीं
कहीं से कोई सदा न आई
वड़ी वफ़ा से निभायी तुमने
हमारी थोड़ी-सी वेवफ़ाई

जहाँ से तुम मोड़ मुड़ गये थे
यह मोड़ अव भी वहीं पड़े हैं
हम अपने पैरों में जाने कितने
भँवर लपेटे हुए खड़े हैं

कहीं किसी रोज़ यूँ भी होता
हमारी हालत तुम्हारी होती
जो रात हमने गुज़ारी मरके
वह रात तुमने गुज़ारी होती

तुम्हें यह ज़िद थी कि हम बुलाते
हमें यह उम्मीद वह पुकारें
है नाम होंठों पे अब भी लेकिन
आवाज़ में पड़ गयी दरारें

हज़ार राहें मुड़के देखीं
कहीं से कोई सदा न आई
वड़ी वफ़ा से निभायी तुमने
हमारी थोड़ी-सी वेवफ़ाई

थोड़ी सी बेवफाई

दिल ढूँढता है फिर वही फ़ुर्सत के रात-दिन
बैठे रहें तसव्वुरे-जानाँ किये हुए

जाड़ों की नर्म धूप और
आँगन में लेट कर
आँखों पे खींचकर तेरे
दामन के साये को
औंधे पड़े रहें, कभी
करवट लिये हुए
दिल ढूँढता है...

या गर्मियों की रात जो
पुरवाइयाँ चलें
ठंडी सफ़ेद चादरों पे
जागें देर तक
तारों को देखते रहें
छत पर पड़े हुए
दिल ढूँढता है...

बर्फ़ीली सर्दियों में किसी भी पहाड़ पर
वादी में गूँजती हुई ख़ामोशियाँ सुनें
आँखों में भीगे-भीगे-से लम्हे लिये हुए
दिल ढूँढता है फिर वही फ़ुर्सत के रात-दिन
बैठे रहें तसव्वुरे-जानाँ किये हुए

मौसम

रुके-रुके-से क़दम, रुकके बार-बार चले
क़रार लेके तेरे दर से बेक़रार चले

सुबह न आयी कई बार नींद से जागे
थी एक रात की यह ज़िंदगी, गुज़ार चले

उठाये फिरते थे एहसान दिल का सीने पर
ले, तेरे क़दमों में, यह क़र्ज़ भी उतार चले

रुके-रुके-से क़दम, रुकके बार-बार चले
क़रार लेके तेरे दर से बेक़रार चले

मौसम

इस मोड़ से जाते हैं
कुछ सुस्त-क़दम रस्ते
कुछ तेज़-क़दम राहें

पत्थर की हवेली को
शीशे के घरौंदों में
तिनकों के नशेमन तक
इस मोड़ से जाते हैं...

आँधी की तरह उड़कर
इक राह गुज़रती है
शरमाती हुई कोई
क़दमों से उतरती है

इन रेशमी राहों में
इक राह तो वह होगी
तुम तक जो पहुँचती है
इस मोड़ से जाते है...

इक दूर से आती है
पास आके पलटती है
इक राह अकेली-सी
रुकती है न चलती है

यह सोच के बैठी हूँ
इक राह तो वह होगी
तुम तक जो पहुँचती है

इस मोड़ से जाते हैं
कई सुस्त-क़दम रस्ते
कुछ तेज़-क़दम राहें
इस मोड़ से जाते हैं

आँधी

तुम आ गये हो नूर आ गया है
नहीं तो, चिराग़ों से लौ जा रही थी
जीने की तुमसे वजह मिल गयी है
बड़ी बेवजह ज़िंदगी जा रही थी

कहाँ से चले कहाँ के लिए
यह ख़बर नहीं थी मगर
कोई भी सिरा जहाँ जा
मिले, वहीं तुम मिलोगे
कि हम तक तुम्हारी दुआ आ रही थी
तुम आ गये हो नूर आ गया है...

दिन डूबा नहीं, रात डूबी नहीं
जाने कैसा है सफ़र
ख़्वाबों के दीये, आँखों में लिये
वहीं आ रहे थे
जहाँ से तुम्हारी सदा आ रही थी
तुम आ गये हो नूर आ गया है
नहीं तो, चिराग़ों से लौ जा रही थी

आँधी

तेरे बिना ज़िंदगी से शिकवा तो नहीं
तेरे बिना ज़िंदगी भी लेकिन ज़िंदगी तो नहीं

काश ऐसा हो तेरे क़दमों से
चुनके मंज़िल, चलें, और कहीं, दूर कहीं
तुम अगर साथ हो, मंज़िलों की कमी तो नहीं
तेरे बिना ज़िंदगी से शिकवा तो नहीं

जी में आता है तेरे दामन में
सर छुपाके हम रोते रहें, रोते रहें
तेरी भी आँखों में आँसुओं की नमी तो नहीं
तेरे बिना ज़िंदगी से शिकवा तो नहीं

तुम जो कह दो तो आज की रात
चाँद डूबेगा नहीं, रात को रोक लो
रात की बात है और ज़िंदगी बाक़ी तो नहीं
तेरे बिना ज़िंदगी से कोई शिकवा तो नहीं

आँधी

यह जीना है, अंगूर का दाना
कुछ कच्चा है, कुछ पक्का है
अरे, जितना खाया मीठा था
जो हाथ न आया खट्टा है

यह घूमता पहिया, गोल रुपैया
हाथ न आये रे
और मैं हूँ इसके साथ, कि साथी
साथ न जाये रे

हाथ न आये तो समझो है सपना
जेब में हो तो प्यारे माल है अपना
जी के देखो, जीने वाले यूँ भी जीते हैं
दिन को चादर फट जाये तो रात को सीते हैं

थोड़ा-सा रो के, थोड़ा-सा हँसना
थोड़ा-सा रुकना, थोड़ा-सा चलना

यह जीना है, अंगूर का दाना
कुछ कच्चा है, कुछ पक्का है
अरे, जितना खाया मीठा था
जो हाथ न आया खट्टा है

खट्टा-मीठा

बड़ी देर से मेघा बरसा, हो रामा,
जली कितनी रतियाँ

इस पहलू झुलसी, तो उस पहलू सोयी
सारी रात सुलगी मैं, आया न कोई
बैठी रही रखके हथेली पे दो अँखियाँ
जागी सारी रतियाँ
बड़े देर से मेघा बरसा, हो रामा,
जली कितनी रतियाँ

थोड़ा-सा तेज़ कभी, थोड़ा-सा हलका
रोका न जाये, मुई अँखियों का टपका
लाखों पिरोईं मैंने, मोतियों की लड़ियाँ
जागी सारी रतियाँ
बड़ी देर से मेघा बरसा, हो रामा
जली कितनी रतियाँ

नमकीन

आँख में क्यों नमी-सी रहती है
जाने कैसी कमी-सी रहती है

हँस लिये, रो लिये हैं जी-भरके
जीना सीखा है जीते-जी मरके

साँस फिर भी थमी-सी रहती है
आँख में क्यों नमी-सी रहती है

ज़िंदगी अब कभी न रास आये
दफ़न कर दें हमें तो साँस आये

साँस ऐसे जमी-सी रहती है
आँख में क्यों नमी-सी रहती है
जाने कैसी कमी-सी रहती है

ख्वाहिश

मैंने तेरे लिए ही सात रंग के सपने चुने
सपने, सुरीले सपने
कुछ हँसते, कुछ ग़म के, तेरी आँखों के साये
चुराये, रसीली यादों ने

छोटी बातें, छोटी-छोटी बातों की हैं यादें बड़ी
भूले नहीं, बीती हुई इक छोटी घड़ी

जनम-जनम से आँखें बिछायीं तेरे लिए
इन राहों में

भोले-भाले दिल को बहलाते रहे
तनहाई में, तेरे ख़यालों को सजाते रहे

कभी-कभी तो आवाज़ देकर मुझको जगाया
ख़्वाबों ने

मैंने तेरे लिए ही सात रंग के सपने चुने
सपने, सुरीले सपने

आनंद

जब भी यह दिल उदास होता है
जाने कौन आस-पास होता है

होंठ चुपचाप बोलते हों जब
साँस कुछ तेज़-तेज़ चलती हो
आँखें जब दे रही हों आवाज़ें
ठंडी आहों में साँस जलती हो

आँख में तैरती हैं तसवीरें
तेरा चेहरा तेरा ख़याल लिये
आईना देखता है जब मुझको
एक मासूम-सा सवाल लिये

कोई वादा नहीं किया लेकिन
क्यों तेरा इंतज़ार रहता है
बेवजह जब क़रार मिल जाये
दिल बड़ा बेक़रार रहता है

जब भी यह दिल उदास होता है
जाने कौन आस-पास होता है

सीमा

यह साये हैं, दुनिया है परछाइयों की
भरी भीड़ में, ख़ाली तनहाइयों की

यहाँ कोई साहिल-सहारा नहीं है
कहीं डूबने को किनारा नहीं है
यहाँ सारी रौनक़ है रुसवाइयों की
यह साये हैं...

कई चाँद उठकर जलाये-बुझाये
बहुत हमने चाहा ज़रा नींद आये
यहाँ रात होती है बेदारियों की
यह साये हैं...

यहाँ सारे चेहरे हैं माँगे हुए-से
निगाहों में आँसू भी टाँगे हुए-से
बड़ी नीची राहें हैं ऊँचाइयों की
यह साये हैं, दुनिया है परछाइयों की
भरी भीड़ में, ख़ाली तनहाइयों की

सितारा

आप आये ग़रीबख़ाने में
आग-सी लग गयी ज़माने में

आप ही की नज़र लगी वर्ना
देर लगती शबाब आने में

दिल में ऐसे छुपा लिया है ग़म
आग रख ली है आशियाने में

एक हीरा है ज़िंदगी लेकिन
उम्र लगती है ज़हर खाने में

आप आये ग़रीबख़ाने में
आग-सी लग गयी ज़माने में

सितारा

थोड़ी-सी ज़मीं, थोड़ा आसमाँ
तिनकों का बस इक आशियाँ

माँगा है जो तुमसे वह ज़्यादा तो नहीं है
देने को तो जाँ दे दें, वादा तो नहीं है
कोई तेरे वादे पे, जीता है कहाँ
थोड़ी-सी ज़मीं...

मेरे घर के आँगन में, छोटा-सा झूला होगा
सोंधी-सोंधी मिट्टी होगी, लेपा हुआ चूल्हा होगा
थोड़ी-थोड़ी आग होगी, थोड़ा-सा धुआँ
थोड़ी-सी ज़मीं...

रात कट जायेगी तो कैसे दिन बितायेंगे
बाजरे के खेतों में कौए उड़ायेंगे
बाजरे के सिट्टों-जैसे बेटे हों जवाँ
थोड़ी-सी ज़मीं थोड़ा आसमाँ
तिनकों का बस इक आशियाँ

सितारा

रिश्ते बस रिश्ते होते हैं

कुछ इक पल के
कुछ दो पल के

कुछ परों से हलके होते हैं
बरसों के तले चलते-चलते
भारी-भरकम हो जाते हैं

कुछ भारी-भरकम बर्फ़ के-से
बरसों के तले गलते-गलते
हलके-फुलके हो जाते हैं

नाम होते हैं रिश्तों के
कुछ रिश्ते नाम के होते हैं
रिश्ता वह अगर मर जाये भी
बस नाम से जीना होता है

बस नाम से जीना होता है
रिश्ते बस रिश्ते होते हैं

गहराई

रंगारंग

अल्लाह मेघ दे, पानी दे
पानी दे गुड़धानी दे, अल्लाह मेघ दे

पानी दे मैं दान कराऊँ
दान कराऊँ गैया
गैया बैकुंठ पार कराये
तैर के तेरा पानी
अल्लाह मेघ दे, पानी दे...

भर-भर दरिया जो बरसे बदरिया
दान कराऊँ, पिया, सोने की मछरिया
मछली मर गयी
नदिया सूखी
नदिया सूखी
फ़ाक़े पड़ गये
फ़ाक़े पड़ गये
बुढ़िया भूखी
कौन बचाये
बादल आये
अबके जो सावन न आवन होये तो
गजुआ बेचारा रे, अँसुवन बोये हो
छल-छल पानी के छींटे उड़ेंगे
सावन के भूले भादों मुड़ेंगे

अरे पड़ेगा सूखा
मरेगा भूखा
मरेगा भूखा
बदरी काका
बदरी काका
गाँव से भागा
नौकरी करने
शहर में मरने
दो नैनों से बरसे पानी—
अल्लाह मेघ दे, पानी दे
पानी दे गुड़धानी दे, अल्लाह मेघ दे

पलकों की छाँव में

डाकिया डाक लाया, डाकिया डाक लाया
ख़ुशी का पयाम कहीं, कहीं दर्दनाक लाया

देवर के भतीजे की
साली की सगाई है
आती पूरनमासी को
क़रार पायी है
मामा आपको लेने आते
मगर मजबूरी है
बच्चों समेत आपको
आना ज़रूरी है
दादा तो गुज़र गये
दादी बीमार है
नाना का भी तेरहवाँ
आते सोमवार है
छोटों को प्यार देना
बड़ों को नमस्कार
देरी मजबूरी, समझो
कारड को तार

शादी का संदेसा तेरा ऐई सोमनाथ लाया
डाकिया डाक लाया, डाकिया डाक लाया

ऐ डाकिया बाबू !
क्या री ?
छः महीना हुई गवा खतौ नाहीं लिखिन
खतौ नाहीं लिखिन—
बोल क्या लिखूँ...?
बस, जल्दी से आवै का लिख देओ न !

विरहा में कैसे, कैसे काटूँ रतियाँ
सावन सुनाये बैरी भीगी-भीगी बतियाँ
अग्नि की चिता में जले
जले बावरिया
नौकरिया छोड़के तू
आजा रे साँवरिया

आजा रे साँवरिया आजा, आज बैसाख आया
डाकिया डाक लाया, डाकिया डाक लाया

होली-के-होली मनीआर्डर से माल भेजे
डाल के लिफ़ाफ़े में सैयाँ गुलाल भेजे
किसी की दीवाली आयी, किसी का दिवाला
निम्मो की गोद भरी, ख़ैरू का प्याला

सात रुपैये लाया...
लाया क्या ख़ाक लाया ?
डाकिया डाक लाया
डाकिया डाक लाया

पलकों की छाँव में

दोस्त कहाँ कोई तुम-सा
तुम-सा नहीं कोई मिस्टर
कभी तुम डार्लिंग, कभी महबूबा
कभी तुम भोली-भाली सिस्टर

एक घूँट में पार्बती तुम
एक घूँट में चंद्रमुखी
एक बार लग जाओ गले से
देवदास हैं बड़े दुखी

एक बूँद में चर्चिल हो गये, एक बूँद में हिटलर
ओ मिस्टर
दोस्त नहीं कोई तुम-सा...

'रम' चढ़े तो ग़म उतरेंगे
'ह्विस्की' से दुख खिसके
'जिन' से भागे भूत निगोड़ा
तुम किसके हम किसके

रात को पीके बोरिया ढूँढे, दिन को ढूँढे बिस्तर
ओ मिस्टर
दोस्त नहीं कोई तुम-सा...

किसकी आँख का आँसू है यह
तैर रहा है प्याले में
डूब न जाये अँधेरे में
खींचो इसे उजाले में

यह किसके सिंदूर से मैंने, दाग़ लिया है दिल पर
ओ मिस्टर
दोस्त नहीं कोई तुम-सा...

खामोशी

बोतल से इक बात चली है
काग उड़ाके रात चली है

आज की मय बहुत मीठी है
आज तो आँख मिला के पीना
चाँद की मिसरी घुल जायेगी
चाँद से होंठ लगा के पीना

बोतल से इक बात चली है...

वादों वाली रात आयी है
आज की रात इनकार न करना
अपने दिन और रात न पूछो
तुमसे जीना तुम पे मरना

बोतल से इक बात चली है...
काग उड़ाके रात चली है...

घर

साफ़ करो इंसाफ़ करो
भई भूल-भुलैया माफ़ करो
है एक पहेली, बड़ी नवेली
जो बूझे तो बने क़लंदर
और ना बूझे तो बंदर

कई बरस तो कभी न आये
आये तो फिर कभी न जाये
काटो फेंको फिर आ जाये
बूझे कोई, यह बतलाये

—दाढ़ी

याद आया, हाँ, राधा नाम की लड़की थी इक
ऊँचे क़द की
तुमको उसकी बात सुनाऊँ
अरे क्या कहती थी, क्या करती थी

गागर में जब अग्नि बरसी
सर पे रख ली रख ली रख ली
जमना पाँव में पड़के बोली
तड़पे मछली मछली मछली
जितनी बार मुझे फूँकोगे
आग लगाके तन से उठेगी
धुएँ की बदली बदली बदली

कौन थी राधा, कौन थी जमना
अब की बार बताओ तो जानें
मिर्ज़ा साहब का लोहा मानें
क्यों क़लंदर, बनोगे बंदर
चुल्लू-भर काफ़ी ना हो तो लाऊँ समंदर
क्यों क़लंदर, बनोगे बंदर—

गागर में जब अग्नि भर के
सर पे रख ली
जमना पाँव में पड़के बोली
तड़पे मछली
जितनी बार मुझे फूँकोगे आग लगेगी
उतनी बार उठेगी तन से
धुएँ की बदली

—हुक़्क़ा

कान पकड़कर नाक पे दोनों घुटने टेके
उठकर दो आँखों में आँखें डालके देखे ?

क्यों क़लंदर, बनोगे बंदर
चलेगा चुल्लू, या लाऊँ समंदर ?
सारी जवानी तो कोई न आया आँख मिलाने
आज बुढ़ापे में कोई कैसे पहचाने
कान पकड़के नाक पे वह जब घुटने टेके
तब आँखों पे चढ़ के 'चश्मा' आँख को देखे

अच्छा, अब के तुम सब मेरी बात बताओ
और न समझो तुम तो सारे गोबर खाओ

एक दफ़ाइक दोस्त के घर पे
सोचा था वह घर पे होगा

जाकर देखा दोस्त नहीं है, दोस्त नहीं है
उस दोस्त की सुंदर पत्नी को जिस हाल में पाया
तौब-तौबा ! देखा और पसीना आया
माँ को भी इक बार यूँ ही देखा था लेकिन
बहन को देख के मुश्किल से दिल को समझाया
ऐसी कितनी सुन्दर-सुन्दर नारियाँ देखीं भैया
लेकिन अपनी पत्नी को उस हाल में देख न पाया

अब कहो क़लंदर
हाल बताओ
वर्ना लँगड़ी चाल दिखाओ—

छिः छिः ! जानता हूँ जो सोच रहे हो
नारी का वह रूप जो तुम सब खोज रहे हो
अब सुनो जवाब—
माँ को देखा, बहन को देखा, देखी भाभी अच्छी
लेकिन अपनी पत्नी को देखा है किसने—

—विधवा

साफ़ किया इंसाफ़ किया
भई भूलने वालों को माफ़ किया

आशीर्वाद

अंग-अंग में आग लगी है, जोड़-जोड़ में ज्वाला
चूरण-गोली-दवा न दे तो, दे दे ज़हर का प्याला

वैंद के पल्ले पड़े
कैसे वैंद के पल्ले पड़े
मरता मर जाये रोग से रोगी
वैंद से कौन लड़े
ऐसे वैंद से कौन लड़े
रोज़ सवेरे मंदिर जाये, पैसे का परशाद चढ़ाये
कहता है कोई प्लेग या हैज़ा
भगवन दे दे मौक़ा ऐसा
कि सब को ताप चढ़े
कैसे वैंद के पल्ले पड़े
वैंद ने इक संसार बसाया, हर प्राणी बीमार बनाया
कानों से बहरे बेचारे
रोने से अंधे वह सारे
अरे हँसें तो दाँत झड़े
कैसे वैंद के पल्ले पड़े...

राहगीर

ऊपर वाला नीचे देखे और नीचे वाला ऊपर
किसी के मुँह में घी रख दे और किसी के मुँह में शक्कर
चक्कर चलाये घनचक्कर, चक्कर, चक्कर

तेरी गली में शाम-सबेरे
चक्कर काटूँ डालूँ डेरे
सात जनम न पूरे होंगे
तुम से शायद सातों फेरे

सब आशिक़ों से पीछा छुड़ाओ
ज़रा हटके, ज़रा बचके

तेरी कारी-कारी कजरारी दो अँखियाँ
जादू-टोने की पिटारी थारी दो अँखियाँ
तोसे पाला पड़ा
काला जादू चढ़ा
तीखी-तीखी हैं ये तलवारी दो अँखियाँ
मेरे जोबना की पंसारी दो अँखियाँ

खट्टी-मीठी चूड़ियाँ जग में
निम्बू संग बताशा
भूखे पेट भजन करते हैं
हाथ में लेकर कासा
—अल्लाह रोटी दे दे, अल्लाह रोटी दे दे—
चक्कर चलाये घनचक्कर, चक्कर, चक्कर

दो दूनी चार

बड़ा बदमाश है यह दिल
यह दिल क़ाबू नहीं आता
कहीं पे तो आयेगा, मुसीबत लायेगा

किसी भी ख़ूबसूरत को
कहीं भी देख लेता है
उसी के पीछे-पीछे यह
मुझे भी खींच लेता है

कहीं पिटवायेगा, मुसीबत लायेगा
बड़ा बदमाश है यह दिल.........

अजब धुनकी में रहता है
अनोखे काम करता है
उसी के दम से जीता है
यह दिल जब जिस पे मरता है

बड़ा बदमाश है यह दिल
यह दिल क़ाबू नहीं आता

दो दूनी चार

हाल-चाल ठीक-ठाक है
सब कुछ ठीक-ठाक है
बी० ए० किया है, एम० ए० किया
लगता है वह भी ऐंवे किया
काम नहीं है वर्ना यहाँ
आपकी दुआ से सब ठीक-ठाक है

आबो-हवा देश की बहुत साफ़ है
क़ायदा है, क़ानून है, इंसाफ़ है
अल्लाह-मियाँ जानें कोई जिये या मरे
आदमी को खून-वून सब माफ़ है

और क्या कहूँ ?
छोटी-मोटी चोरी, रिश्वतख़ोरी
देती है अपना गुजारा यहाँ
आपकी दुआ से बाक़ी ठीक-ठाक है

गोल-मोल रोटी का पहिया चला
पीछे-पीछे चाँदी का रुपैया चला
रोटी को बेचारी को चील ले गयी
चाँदी ले के मुँह काला कौवा चला

और क्या कहूँ ?
होड़ का तमाशा, चला है बेतहाशा
जीने की फ़ुर्सत नहीं है यहाँ
आपकी दुआ से बाक़ी ठीक-ठाक है
हाल-चाल ठीक-ठाक है

मेरे अपने

सारे के सारे, गामा को लेकर, गाते चले
पापा नहीं हैं, धानी-सी दीदी,
दीदी के साथ हैं सारे

'स' से निकले रोज़ सवेरा
दूर करे अँधियारा
'रे' से रेशमी किरनों ने
खूब किया उजियारा

सूरज की रोशन किरनों पे सारे गाते चले
सारे के सारे...

'ग' से गुनगुन
'म' से मद्धम
'प' से एक पुजारी

'ग' से गुनगुन करता है, घूमे क्यारी-क्यारी
'म' से मीठे बोलों में
'प' से एक पुजारी
भँवरे के जैसे फूलों में, सारे गाते चले
सारे के सारे...

'ध' से धूप सुनहरी है
यह नींद नशीली लागे
सरगम हो गयी पूरी
अब क्या होगा आगे

सरगम के साथी, सरगम की धुन में गाते चले
सारे के सारे...

परिचय

धन्नो की आँखों में
है रात का सुरमा
और चाँद का चुम्मा
धन्नो की आँखों में
है रात का सुरमा

ज़हरीली तेरे बिना रात लगे
छाला पड़े आग जैसे
चाँद पे जो हाथ लगे

धन्नो का ग़ुस्सा
है पीर का जुम्मा
और चाँद का चुम्मा

धन्नो तुझे ख़्वाब में देखा है
लैला की, हीर की किताब में देखा है

धन्नो की आँखों में
है नूर का सुरमा
और चाँद का चुम्मा

किताब

अं-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई
मास्टरजी की आ गयी चिट्ठी
चिट्ठी में से निकली बिल्ली
बिल्ली खाये ज़र्दा-पान
काला चश्मा पीले कान
कान में झुमका, नाक में बत्ती
हाथ में जलती अगरबत्ती
अगर हो बत्ती कछुआ छाप
आग में बैठा पानी ताप
ताप चढ़े तो कंबल तान
वी०आई०पी० अंडरवियर-बनियान

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई
मास्टरजी की आ गयी चिट्ठी
चिट्ठी में से निकला मच्छर
मच्छर की दो लम्बी मूँछें
मूँछ पे बाँधे दो-दो पत्थर
पत्थर पे इक आम का झाड़
पूँछ पे लेके चले पहाड़
पहाड़ पे बैठा बूढ़ा जोगी
जोगी की इक जोगन होगी

—गठरी में लागा चोर
मुसाफ़िर देख चाँद की ओर

पहाड़ पे बैठा बूढ़ा जोगी
जोगी की इक जोगन होगी
जोगन कूटे कच्चा धान
वी०आई०पी० अंडरवियर-बनियान

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई
मास्टरजी की आ गयी चिट्ठी
चिट्ठी में से निकला चीता
थोड़ा काला थोड़ा पीला
चीता निकला है शर्मीला
घूँघट डालके चलता है
माँग में सेंदुर भरता है
माथे रोज़ लगाये बिंदी
इंगलिश बोले मतलब हिंदी
'इफ़' अगर, 'इज़' है, 'बट' पर, 'व्हॉट' माने क्या
इंगलिश में अलजेब्रा छान
वी०आई०पी० अंडरवियर-बनियान

किताब

गोलमाल है भई सब गोलमाल है
हर सीधे रस्ते की इक टेढ़ी चाल है

भूख रोटी की हो तो, पैसा कमाइये
पैसा कमाने के लिए भी पैसा चाहिये
माँगे से न मिले तो पसीना बहाइये
बहता है जब पसीना तो रूमाल चाहिये

रूमाल बन गया भी गर क़मीज़ फाड़कर
क़मीज़ के लिए भी तो फिर कपड़ा चाहिये
अरे कपड़ा किसी ने दान ही में दे दिया चलो
दर्ज़ी के पास जाके वह पहले सिलाइये

बिन सिली क़मीज़ पे तो कुछ नहीं लिया
सिली हुई कमीज़ पे सिलाई चाहिये
सिलाई देने के लिए फिर पैसा चाहिये
पैसा कमाने के लिए फिर पैसा चाहिये

गोलमाल है भई सब गोलमाल है
हर सीधे रस्ते की इक टेढ़ी चाल है

गोलमाल

इक दिन सपने में देखा सपना
क्या ?
वह जो है ना अमिताभ अपना—
बच्चन ?
हाँ, मार्केट से 'आऊट' हुआ
लोगों को 'डाऊट' हुआ
मेरी वजह से वह गया, गया, गया
क़िस्मत जो बदली
क्या कहूँ 'रियली', मैं अमिताभ हो गया
इक दिन सपने में देखा सपना...

दाएँ में हेमा—
मालिनी ?
बाएँ में ज़ीनत—
अमान ?
सामने रेखा
पीछे जो देखा
तो क्या हुआ ?
पत्नी खड़ी थी, हाथ में छड़ी थी
देखते-देखते मैं भाग रहा था
देखा, मैं जाग रहा था—
हाँ, सपने में देखा सपना—

हाँ, एक और याद आया

सुनाओ
इक दिन सपने में देखा सपना
वह जो है ना मिस्टर 'पेले' अपना
कॉस्मॉस ?
कहते खिलाड़ी हैं, बड़ा अनाड़ी है
मेरे साथ मैच हो गया, गया, ग़या
अरे मारा जो छक्का तो 'कैच' हो गया
फ़ुटबॉल में क्रिकेट ?
हाँ, कहा ना, सपने में देखा सपना...

हाँ, और एक
सुनाओ
इक दिन छोटी-सी देखी सपनी
सपनी ?
अरे वह जो है ना, लता अपनी
लता गा रही, मैं तबले पे था
वह मुखड़े पे थी, मैं अंतरे पे था
ताल कहाँ, सम कहाँ
तुम कहाँ, हम कहाँ
ता-थई-थैया, ता-थई-थैया
थैया, थैया, थैया
नरकट दुम, नरकट दुम, नरकट ना
सपने में देखा सपना...

गोलमाल

रहने को घर दो

छत पे हो फ़र्श या फ़र्श पे छत हो
रहने को घर दो

खिड़की-उड़की, बिजली-उजली
घंटी-वंटी कुछ नहीं चाहिए, प्यारे,
बस एक छोटा-सा दरवाज़ा हो
ईंट पे ईंट जमाकर लो,
घर ऊपर-ऊपर जाता है
भाड़े से ऊँची बिल्डिंग में
बिल्डिंग से ऊँचा भाड़ा है

फ़र्श पे रहने वाले कैसे अर्श पे जायें, प्यारे,
रहने को घर दो...

थोड़ा-सा जल, थोड़े-से चने
इक चारदीवारी, पाँच जने
शहर में तेरे शरण बिना
शरणार्थी हो गया, प्यारे,
रहने को घर दो...

कुटिया न सही, कोई ख़ाली कुआँ
ऊपर न सही, तहख़ाने में

ख़ाली हो अगर तो जेल सही
शामिल कर लो दीवानों में
आस-पड़ोस उधार मिले तो
कुछ नहीं चाहिए, प्यारे,
रहने को घर दो...

बीवी और मकान

दुनिया में दो सयाने
एक झूठ है, एक सच है
जीने के दो वहाने
एक झूठ है, एक सच है

भूठ कहा कि छा गये पापे
सच बोला कि मर गये
उलटी बात समझ में आयी
सीधी बात से डर गये

झूठ और सच दो यार पुराने
दो आँखों में रहते हैं
बारी-बारी देखके दुनिया
आँख मारके कहते हैं
पाप, पुण्य और पछतावा हैं
एक ही जाप के दाने

रहने को देखी है, यारो,
एक अनोखी नगरी
पगड़ी हो तो छत मिलती है
नंगे सर को छतरी

अंधा राजा देखके हँसते
हैं, नगरी के काने
दुनिया में दो सयाने...

बीवी और मकान

आरती, मन मालती, कहना क्यों नहीं मानती
पाठशाला में छुट्टी हो गयी वस्ता क्यों नहीं बाँधती

सलाम कीजिये, आयी हैं, आरती देवी
यह ठेकेदार हैं भारत की, भारती देवी

सलाम कीजिये, आलीजनाब आये हैं
यह पाँच सालों का देने हिसाब आये हैं

जो इन ख़ुदाओं को सिज्दा करे न, काफ़िर है
वस एक वोट नहीं है, यह जान हाज़िर है
वहुत लगाये-उतारे हैं नाम के लेबल
चलायीं कुर्सियाँ हमने, जमाये हैं टेवल
हिसाब दीजिये, हम बे-हिसाव आये हैं
सलाम कीजिये, आलीजनाव आये हैं

हमारे वोट ख़रीदेंगे हम को अन्न देकर
ये नंगे जिस्म छुपा देते हैं कफ़न देकर
ये जादूगर हैं, ये चुटकी में काम लेते हैं,
ये भूख-प्यास को वातों से राम करते हैं
हमारे हाल पे लिखने किताव आये हैं
सलाम कीजिये, आलीजनाव आये हैं

हमारी ज़िंदगी अपनी है, आपकी तो नहीं
यह ज़िंदगी है ग़रीबी की, पाप की तो नहीं
यह वोट देंगे, मगर अबके यूँ नहीं देंगे
चुनाव आने दो हम आपसे निबट लेंगे
कि पहले देख लें क्या इनक़लाब लाये हैं
सलाम कीजिये, आलीजनाब आये हैं

आँधी

लोगों के घर में रहता हूँ
कब अपना कोई घर होगा
दीवारों की चिंता रहती है
दीवार में कब कोई दर होगा

सब्ज़ी मंडी बाप का घर है
पुलबंगश पे मामा का
श्याम नगर में चाचा का घर
चौक पे अपनी श्यामा का
मायके और ससुराल के आगे
और भी कोई घर होगा
लोगों के घर में रहता हूँ...

इच्छाओं के भीगे चाबुक
चुपके-चुपके सहता हूँ
दूजे के घर यूँ लगता है
मोज़े पहने रहता हूँ
नंगे पाँव आँगन में
कब बैठूंगा, कब घर होगा
लोगों के घर में रहता हूँ
कब अपना कोई घर होगा

गृह-प्रवेश

आँकी चली
बाँकी चली
चौरंगी में झाँकी चली
पानता भाते टाटका बैंगन पोरा

एक गली से झुम्मन निकले
एक गली से झुनिया
बीच सड़क में हो गयी सादी
भाड़ में जाये दुनिया

झूम-झूम-झूम-झूम के नाची
नाची झुनिया बाई
सौ-सौ फेरे लेवे झुम्मन
खूब बजी सहनाई

आँकी चली...

झुम्मन के घर बेटी जनमी
झुनिया जैसे गाल
मूँछ मरोड़ के निकले झुम्मन
जा पहुँचे ससुराल
बात-बात में फ़ारसी बोलें
पानी माँगें 'आब'
प्यासे मर गये झुम्मन मियाँ
पर न छोड़ी ताब

आँकी चली...

'जीम' से जुम्मा, 'जीम' जलेबी
जुम्मन जुनिया 'जीम'
अल्लिफ़-बे की पट्टी पढ़के
झुम्मन हुए हकीम
फूल-फूल के फुलका फूले
पिचक-पिचक पिचकारी
'निमकी' लागे कत्था-चूना
'मिट्ठू' पान-सुपारी

आँकी चली
बाँकी चली
चौरंगी में झाँकी चली
पानता भाते टाटका बैंगन पोरा

नमकीन

हर चीज़ में क़ायदा-क़ायदा-क़ायदा
आख़िर इसका फ़ायदा ?

क़ायदा छोड़के सोचो इक दिन
छोड़के नहीं—तोड़के एक दिन
—हाँ, वही तो—
क़ायदा छोड़के सोचो इक दिन
चाँद निकलता नीचे से
मैदान में रखा होता
मीठी होती मिट्टी उसकी
मीठे घास और पत्ते
—लेकिन चाँद पर तो 'वेजीटेशन' है ही नहीं—

फिर वही क़ायदा ?
उसका फ़ायदा ?

सोचो, चाँद पे दूध के गहरे दरिया बहते
गोरे-गोरे उसमें भालू-चीते रहते
भालू कहता मियाऊँ
और चीता भौं-भौं करता
बिल्ली से घबराती दुनिया
चूहे से जग डरता
ऊँचे-ऊँचे टीले होते क़ुलफ़ी के
और घास फ़लूदा होती

उश्श—हाथ में चम्मच लेकर जाते
रात और दिन बस चाँद ही खाते
चाहे होता ज़ियादा
...क़ायदा-क़ायदा-क़ायदा—
उसका फ़ायदा ?

अच्छा, सोचो, सूरज का रंग नीला होता
पेड़ों का रंग लाल
पंछी रहते पानी में
और मच्छी गगन विशाल
—मालिक तूने किया कमाल
—दाता तूने किया कमाल

—मुश्किल है इस क़ायदे और क़ानून में रहना
—दीदी, आप जो लड़का होतीं ?
—उसका फिर क्या फ़ायदा होता ?
—आपके मुँह पर मूँछें होतीं
नाम भी आपका दादा होता

—सोचो, आँखें 'स्विच' होतीं
और दोनों कान स्पीकर
'स्टीरियोफ़ोनिक सिस्टम' होता
इस मुंडी के भीतर

पेट उलटकर 'टेप' चलाते
आँखों के दो बटन दबाते
नाक में रोशनी जलती-बुझती
मेहदी ख़ाँ की ग़ज़ल निकलती
तब कुछ होता फ़ायदा
क़ायदा-क़ायदा-क़ायदा

नौ रंग की नारंगी होती
दूधिया रंग की बेल
कद्दू की बेलों पर जामुन
बकरी देती तेल

जुएँ होतीं जंगल में
और हाथी पर्स में रखते
रसगुल्लों से सर फटते
पिस्तौल में हलवा भरते

कद्दू की बेलों पर फलते
जामुन और जलेबी
बाबा पेड़े तोड़के खाते
वर्फ़ी खाती बेबी

अच्छा ऐसा क्यों नहीं होता ?
होता है जो क्यों होता है ?
—कारण, फिर वही क़ायदा

खूबसूरत

सुन, सुन, सुन, दीदी तेरे लिए इक रिश्ता आया है

अच्छे घर का लड़का है, पर हक-हकलाता है
मुँह पर दाग़ हैं चेचक के और पान चबाता है
पान चबाता है, जब थोड़ी पीकर आता है
रोज़ नहीं पीता, जब ताश में हार के आता है
ताश भी रोज कहाँ, बस कभी-कभी ही होती है
अच्छा डाका पड़े कभी तो रम्मी होती है
रोज कहाँ ऐसा होता है, डाके पड़ते हैं
आधे दिन तो बेचारे के जेल में कटते हैं

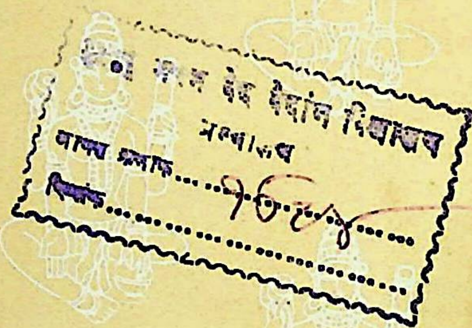
उसका बस चला तो जेल भी तोड़के आयेगा
सीटी एक बजा दोगी तो दौड़के आयेगा

सास ज़रा कम सुनती है पर, बोलती ऊँचा है
ससुरा ठीक ही सुनता है पर, मुँह से गूंगा है
वह सुनता है, वह बोलती रहती है
गूँगे-बहरे की जोड़ी भी अच्छी रहती है
इक देवर है, कुछ पगला है, बस हँसता रहता है

ऐसा वर फिर नहीं मिलेगा, दीदी कह दो 'हाँ'

खूबसूरत




वेद वेदांग विद्यालय
वाराणसी
आगत क्रमांक
दिनांक



गुलज़ार

1936, दीना, पाकिस्तान में जन्म। पार्टीशन के बाद दिल्ली रहे। अपने गीतों, नज़्मों और कहानियों के लिए ख्याति पायी। फ़िल्मों का आकर्षण बम्बई खींच ले गया।

गुलज़ार ने फ़िल्म-क्षेत्र में पहले-पहल जब पाँव रखा तो सहायक निर्देशक के रूप में अनेक प्रख्यात निर्देशकों—बिमल राय, ऋषिकेश मुखर्जी, हेमन्त कुमार आदि—के साथ काम किया। फिर कोमल, सफल, सार्थक गीत लिखे। गीतों के बाद सफल पटकथाएँ तथा कथाएँ लिखीं, जिनका असर बम्बइया फ़िल्मों की दुनिया में एक ताज़ी हवा की तरह पड़ा। अन्त में गुलज़ार ने फ़िल्मों का निर्देशन शुरू किया और एकदम प्यारी, एकदम भिन्न, साहित्य में शरतचन्द्र की-सी संवेदनात्मक, मार्मिक, सहानुभूति और करुणा से ओत-प्रोत, घिसीपिटी लीक से हट कर, फ़िल्में बनायीं। बजाय इसके कि यहाँ की चकाचौंध उन पर हावी होती—गीतकार, संवाद-लेखक और निर्माता गुलज़ार की संवेदनशीलता फ़िल्मी दुनिया पर छा गयी। गुलज़ार ने लगभग 50 फ़िल्मों की कहानियाँ लिखी हैं; दस विशिष्ट फ़िल्मों का निर्देशन किया है—इनमें कुछ फ़िल्में हैं: 'मेरे अपने', 'अचानक', 'आँधी', 'मौसम', 'खुशबू', 'किनारा' और 'मीरा'।